आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2242 • उदयपुर, शनिवार 13 फरवरी, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

बिना पहियों की फ्लोटिंग ट्रेन

चीन में एक नई तरह की हाई–स्पीड ट्रेन के प्रोटोटाइम की शुरूआत की गई है। इसे 'फ्लोटिंग ट्रेन' भी कहा जा रहा है। यह मैग्लेव ट्रेन है यानी मैग्नेटिक लेविटेशन ट्रेन।

इस ट्रेन में पहिए नहीं है बल्कि इस मैग्नेटिक ट्रेन को उच्च–तापमान सुपरकंडक्टिंग (एचटीएस) तकनीक के साथ विकसित किया गया है, जो मैग्नेट का उपयोग करती है। ट्रेन हाई–स्पीड है, 620 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलने में सक्षम है। इस ट्रेन को दक्षिण–पश्चिम जियाओतोंग विश्व विद्यालय के वैज्ञानिकों ने तैयार किया हैं।

खास योजना का हिस्सा है

नई मैग्लेव ट्रेन अपने शहरों के बीच तेजी से लिंक बनाने की चीन की योजना का हिस्सा है। यह 620 किमी प्रति घंटे की गति से यात्रा करने के लिए डिजाइन की है, जो लंदन और पेरिस के बीच यात्रा के समय को केवल 47 मिनट में तय कर सकती है। शोधकर्ता उस गति को 800 किमी प्रतिघंटे तक बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

इसलिए फ्लोटिंग ट्रेन

जानकारी के मुताबिक यह खास तकनीक इस ट्रेन के उपर 'रेंगती' है। ऐसा लगता है कि ट्रेन चुंबकित पटरियों पर फ्लोट कर रही है। इसके चलते ट्रेन में किसी तरह का घर्षण, तेज आवाज जैसी स्थिति पैदा नहीं होती।

दुनिया के सबसे खतरनाक मेलवेयर 'इमोटेट' की कमर तोड़ी

दुनिया के सबसे खतरनाक साइबर अटैक के लिए पहचाने जाने वाले 'इमोटेट' मेलवेयर सॉटवेयर के बुनियादी ढांचे को एक अंतरराष्ट्रीय अभियान के तहत ध्वस्त कर दिया गया है। जर्मनी फैडररल क्रिमिनल पुलिस के मुताबिक 26 जनवरी को चलाए गए इस स्पेशल ऑपरेशन में कई देशों की टीम ने एकजुट होकर साइबर स्पेस के बड़े खतरे को मिटा दिया।

इस अंतरराष्ट्रीय अभियान में नीदरलैंड, यूक्रेन, फ्रांस, इंग्लैंड, कनाड़ा, लिथुआनिया, अमेरिका और यूरोप के विशेषज्ञ शामिल हुए। यह अभियान यूरोपियन मल्टी डिसिप्लनरी प्लेटफॉर्म अगेंस्ट क्रिमिनल थ्रेट्स (इम्पेक्ट) की तैयार रणनीति के तहत किया गया। इसमें यूरोपोल और यूरोजोल ने समन्वय स्थापित किया।

ऐसे बचें शिकार बनने से : विशेषज्ञ कहते हैं कि अनजान लिंक या मेल को न खोलें। अर्जेंट मैसेज वाले मेल का खास ध्यान रखें, यह आपको शिकार बना सकता है। इनाम या लॉटरी के सदेंश वाले मेल के लालच में न आएं।

पासवर्ड चुराने से 'फिरौती' तक :

'इमोटेट' साइबर क्राइम से जुड़ा है। यह लोगों का पासवर्ड चुराता है औ उनके सिस्टम को रिमोट कंट्रोल से नियंत्रित करता लेता है। इसमें फिरौती तक मांगी जाती है। इमोटेट बल्क में साइबर अटैक की रणनीति पर काम करता है।

इसलिए बेहद खतरनाक :

'इमोटेट' सबसे खतरनाक इसलिए माना जाता है, क्योंकि इसने साइबर क्राइम के नाम पर साइबर अपराधियों को किराए पर इस्तेमाल करना शुरू किया। इस खास तरह के ऑपरेशंस को 'लोडर' ऑपरेशन कहा जाता है।

यूजर्स का बड़ा डेटा बेस मिला :

इमोटेट को लेकर डच पुलिस की गहन जांच–पड़ताल में अहम डेटाबेस मिला है। इसमें चुराए गए ई–मेल एड्रेस, यूजर आइडी और पासवर्ड जैसी गुप्त जानकारियां शामिल हैं।

सेवा पथ पर आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

तीन ऑपरेशन के बाद चल पड़ा प्रीत

खेती करके जीवनयापन करने वाले सूरत गुजरात निवासी अजय कुमार पटेल के घर 11 वर्ष पहले प्री मैच्योर बेबी प्रीत का जन्म हुआ। जन्म के 6 माह तक बेबी को नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। गरीब सिान अजय दुःख के तले कर्जदार भी हो गया पर कर भी क्या सकता था। सामान्य हालात होने पर गुजरात के सूरत, राजकोट और अन्य शहरों के प्रसिद्ध हॉस्पीटल्स में दिखाया पर कहीं पर भी उसे ठीक होने का भरोसा नहीं मिला। घर के पड़ोस में रहने वाले राजस्थान निवासियों ने अजय को नारायण सेवा में जाने की सलाह दी। पहली बार 2019 में दिव्यांग प्रीत को लेकर परिजन उदयपुर आए डॉक्टर्स ने ऑपरेशन के लिए परामर्श दिया और एक ऑपरेशन कर दिया। बच्चे का पांव सीधा हो गया।

दूसरी बार फरवरी 2020 में संस्थान आये तब उसके दूसरे पांव का ऑपरेशन किया गया। दोनों पांवों के ऑपरेशन के बाद प्रीत वॉकर के सहारे चलने लग गया। इसे देख परिजन पुनः अक्टूबर 2020 में उसे संस्थान में लेकर आए तब तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब प्लास्टर खुल चुका है... केलीपर्स व जूते पहनने के बाद प्रीत अपने पांव चलने लगा है। अब वह और उसे परिजन प्रसन्न हैं।

दिव्यांग भी कर सकते हैं बड़ा काम

आंकड़ों के लिहाज से भारत में करीब दो करोड़ लोग शरीर के किसी विशेष अंग से दिव्यांगता के शिकार हैं। दिव्यांगजनों को मानसिक सहयोग की जरूरत है। यदि समाज में सहयोग का वातावरण बने, लोग किसी दूसरे की शारीरिक कमजोरी का मजान उड़ाएं, तो आगे आने वाले दिनों में हमें सारात्मक परिणाम देखने को मिल सकते हैं। समाज के इस वर्ग को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराया जाये तो वे कोयला को हीरा भी बना सकते हैं। समाज में उन्हें अपनत्व–भरा वातावरण मिले तो वे इतिहास रच देंगे और रचते आएं हैं। एक दिव्यांग की जिंदगी काफी दुःखों भरी होती है। घर–परिवार वाले अगर मानसिक सहयोग न दें, तो व्यक्ति अंदर से टूट जाता है। वैसे तो दिव्यांगों के पक्ष में हमारे देश में दर्जन भर कानून बनाए गए हैं, यहां तक कि सरकारी नौकरियों में आरक्षण भी दिया गया है, परंतु ये सभी चीजें गौण हैं, जब तहम उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना बंद ना करें। वे भी तो मनुष्य हैं, इश्वयार और सम्मान के भूखे हैं। उन्हें भी समाज में आम लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी है। उनके अंदर भी अपने माता–पिता, समाज व देश का नाम रोशन करने का सपना है। बस स्टॉप, सीढियों पर चढने–उतरने, पंक्तिबद्ध होते वक्त हमें यथासंभव उनकी सहायता करनी चाहिए।

आइए, एक ऐसा स्वच्छ माहौल तैयार करें, जहां उन्हें क्षणिक भी अनुभव ना हो कि उनके अंदर शारीरिक रूप से कुछ कमी भी है। नारायण सेवा संस्थान परिवार की अपील है कि दिव्यांगों का मजाक न उड़ाएं, उन्हें सहयोग दें। साथ ही उनका जीवन स्तर उपर उठाने में संस्थान के प्रकल्पों में मदद भेजकर स्वयं सहयोगी बनें... एक उदाहरण पेश करें अपने परिवार में... समाज में.... संस्कारों से...।

नारायण सेवा ने दिया नवजीवन

1

हिमाचल में रहने वाली संतोष दोनों पैर नहीं होने पर भी हिम्मत हौसला बनाये हुये है। वे कहती हैं कि मेरा पहली एक पांव खराब हो गया मैं नहीं चल पाती थी। उसके कारण दूसरा पांव भी मुड़ गया फिर कई जगह दिखाया फिर भी इसका इलाज नहीं हो पाया, नारायण सेवा संस्थान आने पर डॉक्टर ने ऑपरेशन किया। यहाँ निःशुल्क ऑपरेशन कर उस पैरों को सही किया और दूसरा कृत्रिम पांव लगा कर उसका नई जिंदगी की सौगात दी और पांव को सीधा कर दिया। ये कहती हैं कि संस्थान ने मुझे शक्ति दी चलने के लिये मैं संस्थान को बहुत धन्यवाद देती हूँ।

2

बिना पैर जिंदगी की राह पर चलना कितना मुश्किल होता है ये एहसाह वो ही महसूस कर सकता है। जिसने दर्द को सहा है। एक दुर्घटना में अपने दोनों पांव गवा चुका राजुकुमार बिहार का रहने वाला है वह बताता है कि मैं गांव में पढ़ाई करता था और किसी कारण में शहर में काम से आया था तो मेरा एक्सीडेंट हो गया मेरे दोनों पैर कट गये।

नारायण सेवा संस्थान ने राजु को दोनो पांव लगाये निःशुल्क। तो उससे महसूस हुआ पांव है तो जहान है। राजु बोला –मैं नारायण सेवा संस्थान में आया हूँ और पैर लगने के बाद मै चल रहा हूँ मैं संस्थान को तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ। मेरे पांव लगने पर मुझे बहुत खुशी हो रही है। संस्थान को धन्यवाद देता हूँ

3

पैरो के बिना जिंदगी के क्या मायने है? तीन साल पहले एक एक्सीडेंट में अपने पांव खो चुका मैं क्रांति लाल, गुजरात का हूँ अपने दर्द को समटे हुये जिंदगी में आगे बढ़ने का हौंसला बरकरार है। तीन साल बाद मैं पांव पर खड़ा हूँ । नारायण सेवा संस्थान ने उसे पैरों पर खडा करके जिंदगी में आगे बढ़ने के लिये समर्थ बनाया है मुझ बकौल क्रांतिलाल पैरो पर .चलने पर खुशी हो रही है मैं नारायण सेवा संस्थान को बहुत धन्यवाद देता हूँ

4

छोटी उम्र में करंट लगने पर अपना दायां हाथ खो चुके शुभम पंवार का हौसला बरकरार है और जिंदगी जीने की तमन्ना है। उसी के अनुसार– मैं धार जिला मध्यप्रदेश का हूँ। मैं 9 साल का थाजब करंट लगा था नारायण सेवा संस्थान ने मुझे निःशुल्क कृत्रिम हाथ लगाकर मेरी जिंदगी को खुशियों से भर दिया। अब मैं दोनों हाथों से जिंदगी जी रहा हूँ। मुझे संस्थान के बारेमें टी.वी. से पता चला ,संस्थान परिवार को बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ।

मातृ- पितृ देवो भवः

एक बालक अपने माता–पिता की बहुत सेवा किया करता था। उसके मित्र उससे कहते– अगर, इतनी सेवा तुम भगवान की करते तो तुम्हें भगवान मिल जाते। लेकिन उसे उनकी बातों से कोई फ़र्क नहीं पड़ता और वह माता–पिता की सेवा में पूर्ण निष्ठा से अनवरत लगा रहता।

माता–पिता की सेवा–भक्ति से प्रसन्न होकर एक दिन भगवान उसके घर आ गए। उस समय वह माँ के पैर दबा रहा था। भगवान उसके घर के द्वार पर खड़े रहकर बोले– द्वार खोलो बेटा। मैं तुम्हारी सेवा से प्रसन्न होकर तुम्हें वरदान देने आया हूँ।

बालक ने विनम्र स्वर में उत्तर दिया– प्रतीक्षा कीजिए प्रभु, मैं माँ की सेवा में लगा हूँ। कुछ देर बाद प्रभु ने पुनः कहा' द्वारा खेले ,बेटा' बालक ने कहा – ' प्रभु माँ को नींद आने पर ही प्रभु मैं द्वार खोल पाऊंगा।

मैं लौट जाऊँगा।– भगवान ने उत्तर दिया।

"आप पधारे आपके दर्शन न पाने का मुझे दुखः होगा। भगवन् किंतु मैं सेवा को बीच में नहीं छोड़ सकता।"

कुछ देर बाद सेवा समाप्त हुई और उसने दरवाजा खोला तो पाया कि भगवान तो द्वार पर ही खड़े हैं। उन्होंने बालक से कहा– लोग मुझे पाने के लिए कठोर तपस्या करते हैं परंतु तुम्हें दर्शन देने के लिए मुझे प्रतीक्षा करनी पड़ी।

हे ईश्वर! जिन माता–पिता की सेवा ने आपको मेरे पास आने को मजबूर कर दिया उन माता–पिता की सेवा को बीच में छोड़कर दरवाज़ा खोलने कैसे आ सकता था?

प्रभु उसके जवाब से बहुत प्रसन्न हुए और उसे खुश रहने का आशीष देते हुए कहा कि माता – पिता साक्षात तीर्थ हैं। उनकी सेवा से बढ़कर कुछ भी नहीं।

बंधुओं! यही जीवन का सार है। जीवन में माता–पिता तथा उनकी सेवा से बढ़कर कुछ भी नहीं है। माता–पिता ही हमें जीवन देते हैं।

माता–पिता ही कठोर परिश्रम और भूख–प्यास बर्दाश्त कर संतान का भविष्य बनाते हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम कभी उन्हें कष्ट न होने दें। उनकी आँखों में कभी भी आँसू ना आएं चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

लाल बहादुर शास्त्री जी की दुःखी पीड़ित के लिये हमदर्दी

घटना उन दिनों की है जब लाल बहादुर शास्त्री रेल मंत्री थे, मंत्री होने के बावजूद शास्त्री जी सामान्य व्यक्तियों की भांति सरल स्वभावी थे। अहंकार तो उनको रत्ती भर भी छू नहीं पाया था।

एक बार उन्हें किसी सभा को संबोधित करने अन्य शहर में जाना था। सामान्यतः वे रेल से सफर करते थे। कार का उपयोग बहुत कम करते थे। किन्तु उस दिन कार्य की अधिकता के कारण काफी विलम्ब हो गया था। साथ में जाने वाले मंत्री के आग्रह पर कार द्वारा जाने को तैयार हो गये। रास्ते में कुछ ग्रामीण लोगों ने कार को रोक लिया।

उनमें से एक ने कहा साहब एक किसान की पत्नी का प्रसव (बच्चा) होने वाला है। समय पर बड़े अस्पताल नहीं पहुंचाया गया तो उसकी और बच्चे की जान जा सकती है। शास्त्री जी तुरन्त तैयार हो गये। तुरन्त दूसरा मंत्री बोला यह आप क्या कर रहे हैं।

पहले ही बहुत देर हो चुकी है। शास्त्री जी बोले मान्यवर यदि मैं सभा में नहीं जा सका तो कोई अनर्थ नहीं होगा। यदि महिला को अस्पताल नहीं पहुंचाया तो जीवन संकट में पड़ सकते हैं। ऐसे थे दयालु हमारे शास्त्री जी।

सम्पादकीय

निन्दा एक नकारात्मक भाव है, इसे कहीं– कहीं दुर्गुण भी कहा गया है। क्यों? निन्दा से निन्दक को सुख मिलता है, पर ध्यान रहे यह सुख हानिकर है। निन्दा करने से हमारा स्वभाव हर बात में निषेधात्मक चिंतन की ओर प्रवृत्त होने लगता है, जीवन में उदासीनता का उद्भव होने लगता है तथा प्रत्येक घटनाक्रम में हम निराशाजनक तथ्य ढूंढने के आदी हो जाते हैं।

इन बातों से हमारा वैचारिक, मानसिक व व्यावहारिक स्तर निम्न से निम्नतर होने लगता है। हमने जिसकी निन्दा की उसे कितनी क्षति होगी पर हमें तो ये सारी क्षतियां होना सुनिश्चित हो गया न। निन्दा एक प्रकार का रस है। यह स्वाद जिसको लग जाता है वह निन्दा–नशेड़ी हो जाता है। अनजाने ही वह अपनी प्रगति में प्रतिरोध बन जाता है। निन्दा क्यों करें? किसी के मूल्यांकन का अधिकार हमें किसने दिया? यदि हमारी रुचि मूल्यांकन में ही है तो क्यों नहीं आत्ममूल्यांकन करें?

आत्मविश्लेषण करें। सच तो यह है कि हम अपनी कमियों को ढकने के लिए औरों की निन्दा करने लगते हैं, ताकि अपने दोषों पर ग्लानि न हो। जीवन ऐसी शुतुरमुर्गी क्रियाओं से नहीं चलता है। हमें परनिन्दा का व्यसन छोड़ना ही होगा तभी आगे बढ़ पायेंगे।

कुछ काव्यमय

निन्दा का आनंद भी,
खूब उठाते लोग।
लेकिन मानव के लिये,
यह है भारी रोग।।
निन्दा करने से उठे,
मन में खोटे भाव।
जिसकी निन्दा हो रही,
उसको लगते घाव।।
नहीं किसी का लाभ है,
उभय पक्ष नुकसान।
निन्दक निन्दित व्यथित हो,
होती हानि समान।।
निन्दक निर्मल ना बने,
कर लो खूब प्रयास।
उसके सारे काम ही,
बन जाते उपहास।।
निन्दा की आदत बने,
बुरे भाव का मूल।
लगते बोये फूल हैं,
पर उगते हैं शूल।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

प्रेम तो अमर जड़ है

आपसे प्रश्न पूछता हूँ ऐसा कौन था जिन्होंने रणक्षेत्र में ऐसे बंकर बनाये, ऐसे चक्रव्यूह की रचना की जिसमें भीमसेन जी को भी और अर्जुन को भी अंदर नहीं जाने दिया था, नाम बताओ?

हाँ जयद्रथ। जयद्रथ का समय प्रतिकूल इसलिये आ गया क्योंकि उन्होंने दुष्टता का काम किया, और समय ऐसा प्रतिकूल आया कि अर्जुन ने जयद्रथ वध की प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं जयद्रथ का आज शाम को सूर्यास्त से पूर्व अवश्य वध कर दूँगा, और यदि वध नहीं कर पाया तो मैं अपने आप को चिता में लिटा के अग्नि को समर्पित हो जाऊँगा।

बन्धुओं, भाइयों और बहनों महाभारत की कथा है आपने बहुत बार श्रवण की है। सूर्यास्त होने जैसा लगने लगा, अर्जुन ने चिता सजाने की आज्ञा दे दी कि मुझे तो चिता में बैठना है। अब मैं जयद्रथ का वध नहीं कर पाया। अब मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूंगा। उस समय भगवान कृष्ण ने कहा– देख अर्जुन देख सूर्यदेव तो चमक रहे हैं, ये जयद्रथ सामने खड़ा है। उठा अपना गांड़ीव उठा और धनुष पर प्रत्यंचा चढाके इसका वध कर दे, और वध भी किया।

कहा था कि इसके मस्तक को धरती पर गिरने मत देना। इसके मस्तक को इसके पिताजी की गोद में स्थापित करना और पिताजी जैसे ही उठे वो मस्तक धरती पर उनकी गोद से गिर गया और उनके पिताजी के सिर के भी हजारों टुकड़े हो गये क्योंकि ऐसा ही शाप और वरदान उनको मिले हुये थे। बन्धुओं जब हम भक्ति की बात करते हैं, जब हम बात करते हैं कि प्रेमी देते हैं, लेते नहीं, प्रेम एक सौदा नहीं है।

– कैलाश 'मानव'

राग को अनुराग में बदलें

अनेक उपलब्धियों के बाद भी मनुष्य का जीवन अशांत और तनाव से भरा है। वर्तमान दौर में लोगों का दृष्टिकोण बदल गया है। इसलिए आत्मचिंतन की जरूरत है। ईश्वर को देखने के लिए ज्ञान और वैराग्य की दृष्टि रखना होगा। वे सामने खड़े हैं, लेकिन हमारा विवेक काम नहीं कर रहा है।

इस कारण परमात्मा के दर्शन से वंचित हैं। राग को अगर भगवान के चरणों से जोड़ दें तो वह अनुराग बन जाएगा। यदि व्यक्ति का आचरण पवित्र और पुनीत हो तो जीवन ही श्रेष्ठ बन जाता है। सत्साहित्य और सत्संग श्रेष्ठ आदर्शों का पथ प्रशस्त करते हैं।

हमारा सद्व्यवहार ही जीवन की सफलता का आधार है। 'अच्छे बनो और अच्छे कर्म करो' यह सिद्धांत सत्य के सिद्धांत पर आधारित है।

किसी वस्तु के गुण–दोषों को जानने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि सत्य–असत्य के सिद्धांत को अपने पर लागू करें। हम यह सोचें कि जब हम अच्छा करेंगे, तो अनुभव भी अच्छा होगा। गलत कार्य का परिणाम सदैव दुखदायी होता है। दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें, जैसा कि आप अपने साथ चाहते हैं। दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक रखें।

–सेवक प्रशान्त भैया

मानव सदाचार

समाज व राष्ट्र के अभ्युदय के लिए जिन बातों की आवश्यकता होती है, उनमें सदाचार का ऊँचा स्थान है। राष्ट्र की सामाजिक स्थिति को सुदृढ़, सुसम्पन्न, शांतिपूर्ण एवं सहानुभूति युक्त बनाये रखने के लिये सदाचार एक महान साधन है।

इसकी शीतल छाया में राष्ट्र पारस्परिक कलह से सदा बचा रहकर सुख समृद्धि का निर्बाध उपभोग करता है। सदाचारहीन राष्ट्र भयावह भौतिक शक्तियों के रहते भी पतन की ओर अग्रसर हो जाते हैं और देखते–देखते विनाश के गर्त में जा पड़ते हैं।

शत्रुओं को प्रतिक्षण विभीषिका उत्पन्न करने वाली व भौतिक शक्तियाँ उस अवस्था में प्रतिरोध के लिये निर्वीर्य हो जाती हैं अथवा अपने राष्ट्र को ही ध्वस्त कर डालती हैं। इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है।

ऐहिक ऐश्वर्य– मदमत्त मानव सदाचार की महत्ता को झाँक नहीं पाता और विवेक की आँख खुलने पर पश्चात्ताप का आलिंगन करने के बजाय तब और कुछ बाकी नहीं रह जाता। समाज की रक्षा की भावना से सदाचार की उपेक्षा को एक पाप ही समझा जाना चाहिए।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

ज्वेलर्स का नाम सुन कर कैलाश की आंखों में भी चमक आ गई, उसे भी कुछ ऐसे लोगों के पते चाहिये थे जो उसे धन दे सकें। कैलाश ने उससे पूछ लिया कि किन किन ज्वेलर्स के पते आपके पास है। इस पर उस यात्री ने एक पुस्तक अपने बेग से निकाल कर उसे थमाई और कहा कि इसमें सभी ज्वैलर्स के पते हैं।

पुस्तक में 200–300 पते थे। कैलाश की इच्छा हो गई कि काश यह पुस्तक उसे मिल जाती तो उसे काफी मदद मिल जाती। यह संभव नहीं था तो उसने यात्री की अनुमति ले उस पुस्तक से जितने पते नोट कर सकता था कर लिये।

न्यूयार्क पहुँचते ही सहयात्री बिछुड़ गया। मनु भाई उन्हें लेने आ गये थे, उनके साथ कनेक्टिकट में उनकी साली के यहां पहुँच गये। मनु भाई की न्यूयार्क में कोई पहचान नहीं थी, डॉ. अग्रवाल के बनेड़ा के एक परिचित जरूर थे।

उन्हें फोन किया तो उन्होंने इन्हें खाने पर बुला लिया। डॉ. साहब के परिचित काफी सम्पन्न प्रतीत हो रहे थे, चांदी की थालियों व सोने के चम्मचों के साथ उन्होंने भोजन कराया। कैलाश की तो बांछे खिल गई, जरूर इस स्थान से अच्छा चन्दा मिल जायेगा।

खाना खाने के बाद कैलाश ने अपने बेग से एलबम में निकाली और अपने सेवा कार्यों का साहित्य भेंट किया। मेजबान ने यह सब देख कैलाश को प्रयत्नों की भूरि भूरि प्रशंसा की तो उसे विश्वास हो गया कि यहां से कम से कम एक लाख का तो चन्दा मिल ही जायेगा। मेजबान सेवा कार्यों की प्रशंसा करते नहीं अघा रहे थे तो कैलाश मन की मन एक लाख के चेक की राशि बढ़ा कर दो लाख कर रहा था। **अंश-181**

कदंब के औषधीय उपयोग

हिन्दू संस्कृति में कदंब बहुत पवित्र वृक्ष माना जाता है, यह देवताओं को प्रिय है। भगवान कृष्ण का कदंब से निकट का संबंध रहा है, उन्होंने गऊएं चराते हुए अपने सखाओं सहित इन वृक्षों के नीचे विश्राम किया और अपनी बंशी की मधुरतान छेड़ी।

गुणधर्म : इसके कई नाम हैं, जैसे कदंब, कदंबिका, राजकदंब, धूलिकदंब,निघंटुकारों की दृष्टि में कदंब, लघु , रूक्ष रस मे कटुतिक्त और कषाय, विपाक में कटु है। यह त्रिदोषहर, विषध्न, रक्तस्तंभक, कासहर, मूत्र बिरजनीय, अश्मरी, शर्करानाशक है। इसका बाह्म प्रयोग वेदनास्थापन एवं शोधहार है। यह व्रण का शोधन एवं रोपण करता है।

औषधीय उपयोग : कदंब के सभी अवयवों का घरेलू चिकित्सा में उपयोग होता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में उपयोग होता है। आयुर्वेदिक चिकित्सकों एवं निघंटुकारो ने कदंब के अनेक चिकित्सीय उपयोग बताए हैं।

एलर्जीनाशक : बार–बार एलर्जी की शिकायत होने पर कदंब की छाल, फल एवं पत्तियाँ, प्रत्येक 12 ग्राम लेकर 400 मि. ली. स्वच्छ पानी में उबालकर काढ़ा बनाएं। इसका सुबह–शाम सेवन करें। यह काढ़ा एलर्जी के साथ–साथ किसी भी प्रकार के जहर को भी नष्ट कर देता है।

ज्वरनाशक : बुखार न उतरता हो तो कदंब की छाल 10 ग्राम तथा 11 तुलसी दल लेकर काढ़ा बनाएं, इसका सेवन दिन में तीन बार करें। कुछ दिन नियमित सेवन करने से बुखार पूरी तरह से उतर जाता है।

शारीरिक दुर्बलता : किसी भी प्रकार की शारीरिक दुर्बलता में कदंब की फलों का चूर्ण भोजन के बाद सुबह–शाम दूध या स्वच्छ जल के साथ सेवन करें। इसके नियमित सेवन करने से कुछ ही दिनों में शरीर की कमजोरी दूर होकर, शरीर चुस्त बनता है।

चोट–मोच–सूजन : चोट लग जाने पर या मोच आ जाने पर सूजन आ जाती है, इसके लिए कदंब की छाल और पत्तों को पानी में उबाले, इसमे थोड़ा नमक या फिटकरी डालकर सूजन वाले स्थान की सिंकाई करें, तो कुछ दिनों में ही ठीक हो जाती है। इस काढ़े या पानी से घावों को भी धो सकते हैं, इससे जल्दी ठीक हो जाते है।

पाचन तंत्र के रोग : पेट, बीमारियों का घर है। पेट में कब्ज, गैस, आफरा, गले में खराश, अपच एसिडिटी में कदंब के फल का रस निकालकर उसमें सेंधा नमक मिलाएं, 2–2 चम्मच सुबह–शाम सेवन करें। इससे पाचन–तंत्र दुरस्त रहता है। पेट की समस्याएं नहीं होती है, भोजन में अरूचि समाप्त हो जाती है।

मुंह के छाले : पेट में कब्ज रहने से अक्सर मुंह में छाले हो जाते है। कदंब के पत्ते तथा फल को पान में खूब उबालकर इस पानी को ठण्डा कर लें, अब इस पानी से दिन में तीन बार कुल्ला करें। इससे छालों में तुरंत आराम मिलता है।

डायबिटीज : यानी मधुमेह के रोगियों के लिए कदंब के बीज इंसुलिन की तरह मददगार है। वे शर्करा के स्तर को तुरंत नियंत्रण मे लाने में सहायक है। इसके फल, पत्तियों तथा छाल का रस मधुमेह में फायदेमंद है।

कदंब के वृक्ष के नीचे का शांत वातावरण ध्यान, योग ,प्राणायाम तथा व्यायाम के लिए बड़ा ही मुफीद है। इसके शांत और सुगंधित वातावरण में अच्छा महसूस होता है।

आशा का दीप

मेरा नाम शिवानी सोनी है। मैं तीन बार नेशनल खेल चूकी हूँ जूडो– कराटे में। हम एक दिनघर के पास में टर्न कर रहे थे तो वेन वाले ने टक्कर मार दी। मैं नीचे गिर गई और बेहाश हो गई। पैर में बहुत गम्भीर चोट आई जब मुझे होश आया तो मुझे डॉक्टर ने बताया कि दो साल तक खड़ी भी नहीं हो सकती, खेल नहीं सकती तो मुझे ऐसा लगा कि जिंदगी खत्म हो गयी है। भाई पंकज बोला– मेरे लिये उस दिन बड़ा दुःख का दिन था जिस दिन मैंने अपनी बहन को हॉस्पीटल में देखा था। बहन को फिर से पैरों पर खड़ा करने की प्रतिज्ञा के चलते पंकज ने 2 महीने तक नारायण सेवा संस्थान से निःशुल्क मोबाइल रिपेयरिंग का कोर्स किया। उसमें सारा का सारा किट जो की मोबाइल रिपेयरिंग में काम आता है। सोल्डर, कॉपर वायर, सोल्डिंग वायर, और टेस्टर वगैरह और मीटर वगैरह जितने भी समान रिपेयरिंग में काम आते हैं वो सब पंकज को दिये। आज पंकज एक महीने में छह हजार रुपये तक कमा लेते है। शिवानी कहती है– मेरे भैया ने मुझसे प्रामिस किया है कि वो बहुत जल्द मेरा ऑपरेशन करवा देगा। मुझे आशा है कि पैरों पे खड़ी हो के वापिस जूडो– कराटे खेल सकूंगी।

अनुभव अमृतम्

लक्ष्य के प्रति समर्पित, कोई साथ चला तो बहुत अच्छी बात है। नहीं चला तो अपनी गति से वो आगे चले गये। भीण्ड़रेश्वर कई महादेव जी के मन्दिरों में जाते। यदि हाँ भरली तो उनके साथ हो लिया, और यदि मन कम हुआ तो कोई बात नहीं। वो अपनी गति से आगे बढ़ गये।

मैं अकेला ही चला था, जानिबे मंजिल मगर।
लोग साथ आते गये, और कारवां जुड़ता गया।।

पिताजी की मन की शांति का कारवां, कितनी अखण्ड शांति? हम लोगों में कभी विचार करें। अन्दर ही अन्दर संघर्ष चल रहा है, कोलाहल चल रहा है। ये विचार गया वो विचार आया, ये भूतकाल में खो गये, ये भविष्य के सपने बुनने लग गये। ये मन वर्तमान में नहीं रहता। वर्तमान में रहने के लिए विपश्यना ध्यान कितना अद्भुत। कितना आनन्द आये? तटस्थ भाव, द्रष्टाभाव, समताभाव की पुष्टि ज्ञान से प्रज्ञा को देखना। प्रज्ञाबुद्धि–सद्बुद्धि, अन्दर की सद्बुद्धि अपनी सद्बुद्धि की लिमिट है– महाराज! कभी –कभी कहते 6 महीने पहले ध्यान नहीं आया। 6 महीने पहले हमने ऐसा कर लिया। यदि उस समय ध्यान आता तो व्यसन नहीं करते। पूर्व में नहीं जाते पश्चिम में जाते। क्यों भाई? उस समय तो अपनी बुद्धि का पूरा प्रयोग किया था। पर उस समय बुद्धि की यही लिमिटेशन थी। यही क्षमता थी। उस समय बुद्धि से पूरी बुद्धि की क्षमता लगा ली। तो आज भी बुद्धि की क्षमता लगा रहे हैं फिर क्यों लगता 6 महीने पहले व्यसन नहीं करते तो अच्छा था? उस समय बुद्धि की सीमितता। बुद्धि अपने को लगता पूरी क्षमता में काम करे। बुद्धि की अपनी सीमा है। अपनी विवशता है, असिमित नहीं है। कई बार कहता अब होता तो ऐसा करते, और मन बार –बार कभी अतीत में अरे 30 साल पहले उस मित्र ने फलाने ने ये बोल दिया था। उस समय हमारे से कुछ करते बना नहीं। अब बोल करके देखें। ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। भूतकाल का भी कोलाहल। भविष्यकाल का कोलाहल, ये मन वर्तमान में कम रहना चाहता है, और जब मैं आपका अपना कैलाश जो दृश्य घटा यूरोप की यात्रा में वो घटा भगवान ने मन में इतनी शक्ति दे रखी जो याद रह सके वो याद रह जाये, जो याद नहीं रही, वो नहीं रही। कोई बात नहीं। अच्छी बातें याद रख लीजिए। पुराना पहले किसी ने आपका अपमान किया उसको भूल जाइये।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 61 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023